प्राप्त हो जाती है। कृष्णभावनाभावित पुरुष के दृढ़ निश्चय का आधार वह ज्ञान है जिससे यह पूर्ण बोध हो जाता है कि वासुदेव श्रीकृष्ण ही सम्पूर्ण प्रकट कारणों के आदिकारण हैं (**वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः**)। जिस प्रकार वृक्ष की जड़ में दिया गया जल पल्लव-शाखा आदि को अपने-आप प्राप्त हो जाता है, उसी भाँति कृष्णभावनामृत के द्वारा अपनी, परिवार की, समाज की, राष्ट्र की, मानवता की, वास्तव में सभी की सर्वोच्च सेवा की जा सकती है। अपने कर्म से यदि श्रीकृष्ण का संतोष हो जाय, तो अन्य सब भी सन्तुष्ट हो जायेंगे।

कृष्णभावनाभावित सेवा का सर्वोत्तम अभ्यास श्रीकृष्ण के प्रामाणिक प्रतिनिधि, गुरुदेव के आश्रय में ही किया जा सकता है, जो शिष्य के स्वभाव को जानते हैं और कृष्णभावना के आचरण की ओर उसका पूर्ण मार्गदर्शन कर सकते हैं। कृष्णभावनामृत को भलीभाँति धारण करने के लिए श्रीकृष्ण के प्रतिनिधि की आज्ञानुसार दृढ़तापूर्वक कर्म करना आवश्यक है। इतना ही नहीं, सद्गुरु की आज्ञा को तो वास्तव में जीवन का अनन्य लक्ष्य ही बना लेना चाहिए। श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने 'श्रीगुरुदेवाष्टक' नामक सुप्रसिद्ध स्तोत्र में हमें इस शिक्षा का दान किया हैः

यस्य प्रसादाद् भगवत्प्रसादो यस्याप्रसादान्न गतिः कुतोऽपि।
ध्यायंस्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसंध्यं वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।

'गुरुदेव की कृपा से ही भगवत्कृपा होती है। गुरुदेव को प्रसन्न किये बिना कृष्णभावना की प्राप्ति किसी भी साधन से नहीं हो सकती। अतः तीनों संन्ध्याओं में उनसे कृपा की याचना करे। उन्हीं गुरुदेव के शोभायमान चरणारविन्द की मैं सादर वन्दना करता हूँ।'

यह सम्पूर्ण पद्धति आत्मा के उस पूर्ण ज्ञान पर आधारित है, जिसके द्वारा देहात्मबुद्धि का नाश हो जाता है। आत्मा के तत्त्व को केवल सिद्धान्त रूप में मानना पर्याप्त नहीं, व्यवहार में उसका आचरण भी करना चाहिए। ऐसा होने पर सकाम कर्म रूपी इन्द्रियतृप्ति सम्भव नहीं रहती। नाना प्रकार के सकाम कर्मों से वही मार्गच्युत होता है, जिसकी बुद्धि व्यवसायात्मिका नहीं है।

13.2

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः।।४२।।
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति।।४३।।

याम्=जिस; **इमाम्**=इस प्रकार की; **पुष्पिताम्**=दिखाऊ शोभायुक्त; **वाचम्**=वाणी को; **प्रवदन्ति**=कहते हैं; **अविपश्चितः**=अविवेकीजन; **वेदवादरताः**=वेदानुगामी कहलाने वाले; **पार्थ**=हे पार्थ; **न**=नहीं; **अन्यत्**=अन्य कुछ; **अस्ति**=है; **इति**=यह; **वादिनः**=कहने वाले; **कामात्मानः**=भोगकामी; **स्वर्गपराः**=स्वर्गारोहण के इच्छुक; **जन्मकर्मफलप्रदाम्**=सकाम कर्म, उच्चकुल में जन्म आदि देने